प्रकाशनार्थ

पटना 25 मार्च। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने आज 'चिठियां रेणु की भाई बिरजू को' नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीच्यूट (आद्री), 'अपना आप वर्ल्डवाइड' और गांधी संग्रहालय द्वारा किया गया था। इस पुस्तक का सम्पादन श्रीमती रुचिरा गुप्ता और श्री प्रयाग शुक्ल द्वारा किया गया है और यह राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है।

श्री प्रयाग शुक्ल ने इस पुस्तक को बिहार के प्रख्यात साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा अपने मित्र श्री बालकृष्ण गुप्ता को लिखे पत्रों का संग्रह बताया। उन्होंने कहा कि बड़ी प्रतिष्ठा वाले लेखकों का जीवन समाप्त नहीं होता है और यह पुस्तक यह साबित करती है। रेणु ने लोक जीवन के आनंद को हमारे पास पहुंचाया है।

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रोफेसर अरुण कमल ने इस पुस्तक में प्रस्तुत रेणु के जीवन के तीन पहलुओं पर प्रकाष डाला। रेणु हमेशा आर्थिक तंगी का सामना करते थे और अच्छा खानपान के षौकिन थे। साथ ही वह राजनीति में भी शामिल थे। निर्मल वर्मा के हवाले से प्रोफेसर अरुण कमल ने कहा कि रेणु की किताबों को पढ़ना एक अंकुष के साथ-साथ वरदान भी है।

डॉ अनिल सुलभ ने कहा कि रेणु एक ऐसे लेखक थे जो लोगों की नब्ज को बखूबी पहचान सकते थे। श्रीमती रुचिरा गुप्ता ने बताया कि रेणु कोसी नदी को नारी के रूप में चित्रित किया करते थे। इस अवसर पर प्रख्यात समाजवादी नेता श्री शिवानंद तिवारी (राजद) ने भी अपने विचार रखे और जन सेवा में बालकृष्ण गुप्ता के परिवार की भूमिका की प्रशंसा की। इस अवसर पर डॉ रामबचन राय, श्री तरुण कुमार, डॉ ब्रजेश पांडेय ने भी अपने विचार रखे।

पुस्तक लोकार्पण से पूर्व श्रीमती रुचिरा गुप्ता द्वारा तैयार किए गए चित्रों की प्रदर्शनी प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर इप्टा और नृवागा के कलाकारों ने अपने संगीत और गीतों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इससे पूर्व, आद्री के सदस्य-सचिव डॉ. प्रभात पी घोष ने अपने स्वागत भाषण में रेणु की प्रशंसा की कि वे एक लेखक के रूप में सफल रहे हैं, भले ही वह अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान ग्रामीण पृष्ठभूमि से थे और मामूली साधनों में पले-बढ़े थे। अधिकांश सफल लेखक संभ्रांत और शहरी पृष्ठभूमि से रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ अस्मिता गुप्ता ने किया और धन्यवाद ज्ञापन राजकमल प्रकाशन के श्री अशोक माहेश्वरी ने किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)